भाषा और वाक् में अंतर

भाषा शब्द का प्रयोग अत्यंत व्यापक अर्थों में होता है। इसके पक्ष हैं–सूक्ष्म रूप में स्थायित्व-युक्त एवं (ii) स्थूल रूप अस्थायियुक्त। अतः स्थूल रूप में विशेष अस्थायित्व-युक्त वाणी वाक् है। भाषा और वाक् में अधोलिखित अंतर हैं–

(i) भाषा सूक्ष्म भावात्मक है, किंतु वाक् स्थूल भौतिक है।

(ii) भाषा स्थायी होती है, किंतु वाक् अस्थायी है।

(iii) भाषा के द्वारा विचार-संप्रेषण से या विनिमय से जो ज्ञान होता है, वह भाषा का वास्तविक रूप है, किंतु भाषा-द्वारा जो विचार-विनियम किया जाता है, वही विचार-विनिमय वाक् है।

(iv) भाषा अनिर्वचनीय है, किंतु वाक् निर्वचनीया है।

(v) भाषा नित्या और सुसूक्ष्मा है, किंतु वाक् विनाशशीला और स्थूला है।

(vi) भाषा स्फोट-तत्त्व है, वाक् नाद-तत्त्व है।

(vii) भाषा साध्य है, वाक् साधन है।

(viii) शब्द या वाक्य के श्रवण से जो ज्ञान होता है, वही ज्ञान भाषा है, किंतु दूसरी भाषा-द्वारा यदि कोई बोलता है तो वह सम्भाषण वाक् है।

भाषा और बोली में अंतर

मानव-जाति की व्यष्टि से लेकर सृष्टि तक सभी जगह भाषा की उपयोगिता देखी जाती है। भाषा की विकृति ही 'विभाषा' है। भाषा वैज्ञानिकों ने विभाषा की विकृति को 'उपविभाषा' या 'बोली' कहा है। भाषा और बोली (उपविभाषा) में निम्नलिखित अंतर है–

(i) भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है, बोली का क्षेत्र सीमित है।

(ii) भाषा का साहित्य-भांडार विपुल और विस्तीर्ण होता है, किंतु बोली का साहित्य अत्यल्प होता है अथवा किसी-किसी बोली में साहित्य का अभाव भी है।

(iii) भाषा से बोली की उत्पत्ति होती है, बोली भाषा की जन्मदात्री नहीं होती है।

(iv) भाषा बोली की माँ है, बोली भाषा की पुत्री है।

(v) एक भाषा के अन्तर्गत कई बोलियाँ बोली जाती हैं, किंतु एक बोली की उपजीव्य भाषा एक ही होती है।

(vi) भाषा बोली का बृहत्तर रूप है, बोली भाषा का लघुतम रूप है।

(vii) भाषा राज्य, राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की होती हैं, किंतु बोली का सम्बन्ध ग्राम या जनपद तक ही सीमित होता है।

(viii) व्याकरण की दृष्टि से भाषा साधु प्रयोग है, बोली असाधु प्रयोग है।

(ix) शिक्षित लोग विचार-विनिमय में भाषा का प्रयोग करते हैं, बोली अशिक्षितों का वाक्-व्यवहार का साधन है।

(x) भाषा का वाक्य परिष्कृत होता है, किंतु बोली का वाक्य अपरिष्कृत।

(xi) एक क्षेत्र की बोली विशेष में भी भिन्नता दिखाई पड़ती है, किंतु भाषा के साथ ऐसा नहीं है।

(xii) बोली सरल और सहज होती है, भाषा सरल और सहज के साथ-साथ क्लिष्ट तथा कृत्रिम भी होती है।